

सिद्धि

सं

संस्कृत

2700

श्री गङ्गा सायन म

2700

शुक्ला॥ ॐ वज्रसत्त्वसमय. मन्त्रपालयः ॐ वज्रसत्त्वमो न
प्रतिष्ठा दुःखाः मरुवः सासूना ध्या मरुवः सुपा ध्या मरुवः
अनूनकाः मरुवः सर्वे सिद्धि मप्रयच्छः सर्वे कर्मे सुचं
मचि नः धीर्यं कुरु दू ह ह ह ह ह ह ह ह ग व नः सर्वे न था ग
न व ज्ञ मा म सुचः वज्र ह व म ह स समय सत्त्व ज्ञा ॥ सा थ

धूतिसनाक्षत्रवाने॥ वज्रसत्त्वयाध्वानयायः रुद्रकात्र
निग्वननाडीः सनाक्षवानेः ध्वंसकुसुमानः प्रापसाकिः म
हाशिशसाकिः॥ धनंति सनानयायनः हानेशुत्रज्जुर्दिः
वृद्धवागिसत्त्वयातः नमस्कात्रयाय॥ धनन्यासयायः
लेषसः त्रिकोनचायः दधूसः वैकात्रचायः रुनिकव

र्षेहालप॥ उँ वै वज्रीदकैर्द्वैः ध्वंसकः लाहागिनवज्र
मूडासा नाडी वंकात्रसधियः॥ रुनिकवर्नपा नालः गी
गमनधहाडीतहालप्य॥ धनअर्घविय॥ उँ सनशुत्र
हेअर्घपतिहृस्वाहा॥ नलत्रयाय अर्घपतिहृस्वाहा॥
वृद्धवाधिसत्त्वअर्घपतिहृस्वाहा॥ दक्षदिगवृद्धवा

दिसत्त हं अर्धे प्रणि दृष्टा हा ॥ धूनि अर्धे विर्या ॐः सना
नयायः हानं लंघस्व धनयाय ॥ ॐ वज्र द के स्वाहा ॥ ॐ
दिं स्वाहा ३ आचमनयाय ॥ ॐ कायू विस्व धन स्वाहा ॥
सस लंघन हायः शुभ्रया नः हाथ जोरु लया ॐ नमस्का
नयायः ॥ ॐ ओं श्री मनः सग शुभ्र च न न कमलाय स
कृष्ण नाः वरा स नं क जायः नमो हं नम नमो ॥ ७

सिषा वंधनयायः सकु ॥ ॐ मनिध निवज निमहा प्रणि
सत्र नक्षत्र क्षमा सर्व सत्वा नीच हं हं हं हं स्वाहा ॥ ७
धनमूल सकु न सित स धिया ॐ सकु यायः धाल २९
ॐ श्री वज्र हं हं नू क हं हं हं जकि निजाल सम्य न स्वाहा ॥
धन विह न काया ॐः स्वाहा न स द्वाय ॥ सकु ॥ ॐ ॐ न्य
न्या नूग ना सर्व धं मा नां ॥ ॐ अर्ध ना नुग ना सर्व धं

मानाः ॐ प्रसन्नानुगता सर्वधर्मानां देव्या यदुक्तं
नाम धनं धनं कुरु न चोय ॥ मकुधाल न वी न चो
यः लाहानिनः थपू कायूयायः मकु वी न ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ॥ सिद्धास मूलमकु नः विदु न न नित्यः ॐ गय
निं रुस्मलप नयायः धून का ॐ न्या सयायः हाथ की ॐ
लप्यं धी नः ॐ वृद्धः धर्मः संघया न नमस्का नयाय ॥

ॐ वृद्धः ॐ धर्मः ॐ संघ नमस्का ॐ नय नम ॥ थ
न ज ॐ लाहानिनः चसयाल सधिया ॐ दयात्र गुलिप चि
दिय ॥ मकु ॥ ॐ श्री वज्र ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ कि धिज्ञा न स
मल्ल ल्याहा ॥ धाल ३ ॥ धन लाहान निपां सध नयाय म
कु ॥ ॐ नद नृ कन सध नः दक्षिन ह्रीं ॐ आ काले न स्रक्ष
मधुलैः वास ह्रीं ॐ आ काले नः च द मधुलै ॥ धन ज ॐ

यचिंक उदिय ॥ मनु ॥ ओरुः नमदिं खादाई वाषट हें हें
रुद्र ॥ दपापचिंदिय ॥ ओं वें हों योंदिं मौ हेंदिं हें हें
द्र ॥ धनः कथू कपालः लिक्षल अचिष्टा नयायः मनु ॥ ओं
ओ हें ॥ धनः ऊला हा ननः दपा ला हा न सदायः मनु ॥
ओं ओ हेंः गाल ३ दाय ॥ धनदिग वंध नयायः मनु ॥ ओं
सैं हनि सैं हें हें ॥ ओं गद्र गद्र हें हें ॥ ओं गद्रा ह

यः गद्रा हय हें हें ॥ ओं जानय ह ४ रगव चिया गज हें
हें ॥ चतुर्गोल थायः ह ५ नः दयासः ॥ त्रि ५ नः ऊ ५ स ॥
ओं ओ हें ॥ धमनुः गद्रः नृयः वसू पाल स्व था स थियः थका
का कायाय ॥ धन ऊग दा स या य ॥ ओं ह ॥ नृमल थिय ॥
नमादिं ॥ ह्रू ह्रू थिय ॥ खादा हें ॥ लिक्षल थिय ॥ वाषट ॥ वा
हानियां थिय ॥ हें हें हों ॥ ग ५ः ष ५ः मिखा थिय ॥ रुद्र २ ह

क्यासापनिकथिय॥ अथानथिय॥ डोंवें॥ मरुथिय॥
होंयाँ॥ नृगलथिय॥ दिंमों॥ खालथिय॥ हेंदिं॥ चस्र
यालथिय॥ कैंकैं॥ लिक्षलथिय॥ रुद्रु॥ सकहिनंसा
हायनिथियः॥ अथानयाय॥ धनलाहानदाय॥ अंआ
हें॥ धनआचमनयाय॥ अंदिंस्वारा॥ थूलिनिनसना
न॥ ॥ धननिनकर्मविधि॥ क्रापां॥ नासूलाका

य॥ अंदिंस्वारा॥ कायाविस्रधनस्वारा॥ धनवाः
३ नासूनाकाय॥ अंनमः॥ अथानमः॥ अंनृया
नः॥ किञ्चनिनः॥ धनलस्वस्रधनयाय॥ अंअथादिजा
नमाननः॥ सनापिनाः॥ अंसर्वनथागनः॥ नथाहंसना
पयिष्यामिः॥ अंअनुदिव्यनवालिनी॥ अंआः॥ अंसर्व

नथागतः श्रीरघुकुसुमश्रीयद्वै ॥ सिद्धसर्लखनहा
य ॥ ॐ किं ४ स्याहा ॥ ३ नासूलाकाय ॥ ॐ कायाविश्वध
ने स्याहा ॥ कसलखनहास्यः पूजाहलजय ॥ ॐ नमो
हगवनः पूष्यकेतुः नाजायः नथागतयाइहैकस
म्यस्यैवृद्धाय ॥ नमः ॥ ॐ पूष्य २ महापूष्यः सपू

ष्यः पूष्यसैरवकुः पूष्यावकिन्ननस्याहा ॥ पूजाहज
नियाय ॥ ॐ आ ४ इ ३ तिष्ठवज्रआसनैक ॥ सानकथः
कपाहथियका आसनयाय ॥ ॐ सर्वपापानपनय
इ ॥ सानज ३ अख ३ निने ॥ ॐ सधिवनिवज्रधिम
हाप्रतिमस्तनक्षेत्रमाइहैरुद्र २ स्याहा ॥ सानजिल

सहय ॥ उँ वक्र नित्र क लष धा स्वाहा ॥ मधु ल सः सि
धर्त निच काः थम न निरय ॥ उँ वक्रा द कं कं ॥ उँ वक्रा म
मय कं ॥ उँ वक्र लखः सु ल कं ॥ लख न मधु ल थिल ॥
धन का किः स्या नः लख न स्या मधु ल सहाय कं ॥ उँ दा
नीय मयः मं शु धा च सहि नः जि नं २ च स माङ्ग ल

क्षी निद्ध दयाः पि पि जि का नय नयः विर्यो कि स्याप न
थ्य नः न क्ष धः म क चि ल क न त्रः य ह्य स ल खो क ला
य ना पा न मि नाः ष दि अ ल र नि क्त्वा म नि म धु ल ॥
ह व रु क न क व र्धः स र्व ना क वि नि मू क ४ स न म न
द वि श्रु षः ॥ अ द दि वि त्रि यो को निः धन क न क स

ई न ज्ञाय नः नाज वीसिः सूत्र न वन गृह १ सि नः का
य क ल मा धी कृत्वाः स धु ले खः सु ले खः स व न थ ग न
अधिष्ठानाः अधिष्ठानु स्वाहा ॥ ला ह नि सः स्या न चि कि
र्ध न स्यैः पू य के गा रु ग थ न स्या न च्छ हा लः स धु लः उ य
क्रा डाः व लि स न यः स धु ल सः स्या न वा य २० ॥ ॐ च न्द्रा

न क वि स ल स्वा हा ॥ ॐ व रु स त्व स र्व वि द्वा नू द्वा द य
कै ॥ वि द्वा दि ना स ॥ स धु ल सः स्या न वा य ॥ ॐ रु ३ व रु स हा स
ध्वः मे न व न स ॥ द थू स ॥ ॐ हि स ध्व मे न व न स ॥ रु डा स ॥
ॐ १ ४ सु ख स ध्व मे न व न स ॥ ख डा स ॥ ॐ नै पूर्व वि दि हा
न स ॥ पूर्व स ॥ ॐ त्रै रु दि पा य न स ॥ द क्षि न स ॥ ॐ त्रै

पल्लव दवलियाय नमः ॥ पश्चिमस ॥ ॐ वं उरु न कू नू व
नमः ॥ उग्रस ॥ ॐ या उपदिपाय नमः ॥ अरुन को नमः ॥ ॐ
त्रा उपदिपाय नमः ॥ नैम न को नमः ॥ ॐ ला उपदिपाय न
मः ॥ वायू व्य कू नमः ॥ ॐ उम उपदिपाय नमः ॥ ॐ नमः
नमः ॥ ॐ व्रग न त्राय नमः ॥ पूर्वस ॥ ॐ लज्ज न त्राय नमः ॥

दक्षिणस ॥ ॐ ल पूत्र व न त्राय नमः ॥ पश्चिमस ॥ ॐ वः प्रि
व त्राय नमः ॥ उग्रस ॥ ॐ या ख कू न त्राय नमः ॥ अरुन कू
नमः ॥ ॐ त्रा व कू न त्राय नमः ॥ नैम न कू नमः ॥ ॐ त्रा म नि न
त्राय नमः ॥ वायू व्य ॥ ॐ उमः सर्व निदा न त्राय नमः ॥ ॐ नमः
न कू नमः ॥ ॐ चै च दाय नमः ॥ जडास ॥ ॐ सूर्यो य नमः ॥

षडं स ॥ उँ ॥ ४ ॥ श्री वक्रतु व न म ॥ दध स ॥ पं चो य ॥
त्रय त्रा या य ॥ उँ वक्र गी ॥ अ सा हा ॥ सि क्र ॥ उँ वक्र वा
स सा हा ॥ ग गं का ॥ उँ वक्र पू ष्यं सा हा ॥ सौ ॥ उँ वक्र धू
प सा हा ॥ धू ॥ उँ वक्र दि प सा हा ॥ म न ॥ उँ वक्र ने व
द सा हा ॥ ने व द ॥ उँ न मी ह ग व न वि न विले ख ल

य कैं रु द् ॥ ध म ला ॥ ध न का कि सा नः लं र व न स्यः स ध
ल स हा य के ॥ उँ च नु ज त्वं म यं म नूः म ष्ट दि पाः पु सा
हि नः ना ना ज त्वं स मा कि नूः न द नू रु ज द यि नः
गु त्र त्या वृ क् ध म रू ष्यः स ध रं ष्य न ध्य व चः नि र्या
क याः मि रा व्य नः स पू र्णु ज त्वं म धु ली ॥ गो न ॥ ध न

किं च कास्यः ह्यथ उपलप्य च ॥ ॐ ज्ञा ४८ श्रीमद्भक्त
 नगुत्र वनचनध कमलायः सम्यक्कृताः गुत्रवराः
 सनः कजाय नमो ह्ये नमस्तु नमो नमः ह्ये ह्ये
 नमस्यामिः श्रीगुत्र नाथपरिधम ॥ गुत्रयानकिम्पः
 निम्न ॥ धनसनाहिसपूजा ॥



सनाहिसरावनास्यो नय ॥ ॐ निम्नानचक्रं स्तिनीव
 काजजः लस्मिमागारिनी कनिष्ठं हवनवलिः ह्ये
 नदवनिमा कर्ष्यसमयदवनी रावयनः स्यरावस्र
 ध्ये ह्ये ॐ ३ वशवागारिप्रवसका नयः पाद्यादि
 जर्घ्ये आचमनीप्रतिष्ठस्याह ॥ सनाहिकासीतपसा
 २ सवेधमोनाः स्यरावश्रुत्या ह्ये २

पुनः नमः ॥ धनसनाहिसः स्या न वाय ॥ ॐ सर्ववृद्धं जकि
 नियवज्रपूष्पं प्रतिष्ठु स्याहा ॥ दधूस ॥ ॐ वज्रवर्धुनि
 यवज्रपूष्पं प्रतिष्ठु स्याहा ॥ जअस ॥ ॐ वज्रवेनाचनि
 यवज्रपूष्पं प्रतिष्ठु स्याहा ॥ षअस ॥ ॐ अदियानव
 जपूष्पं प्रतिष्ठु स्याहा ॥ इअन ॥ ॐ पूष्टुगिर्त्रियवज्र

पूष्पीपुनि च स्वाहा ॥ खडास ॥ ओं काम नृपिंय वज्रपू
ष्पीपुनि च स्वाहा ॥ थडास ॥ ओं श्री हृणाय वज्रपूष्पी
पुनि च स्वाहा ॥ जडास ॥ ओं धर्म काय वज्रपूष्पीपुनिः
स्वाहा ॥ खडाक थूकनस ॥ ओं ह्रीं ग काय वज्र
पूष्पीपुनि च स्वाहा ॥ जडाक थूकनस ॥ ओं निमो
॥ २

न काय वरुपूषी प्रनिष्ठ स्यादा ॥ ऊ अथ धृक् न स ॥
 ॐ म हा गुरु काय वरुपूषी प्रनिष्ठ स्यादा ॥ अथ धृ
 क न स ॥ ॐ नै न्दा वरुपूषी प्रनिष्ठ स्यादा ॥
 प्य ष लं न य ॥ ध न रा व ना स्यात् ॥ ह ल न य ॥ स रा
 व सुखाः सर्वे धर्मा नाः स रा व सुखा इति ॥ धृ ॥ ॐ वरु

धृ प स्यादा ॥ ॐ वरा कृ स क ॥ वरुपा स किं ॥ वरु हा
 न वै ॥ वरा वे स हं ॥ ध न रा किं ना हा जल प ची न ॥
 ॐ अ म स रु लं न मः स रु लं त्रि वि नं च मः स म य स ल
 द वा ना ग ॥ ह वि ना ह न स र्ग यः क रु मे ह द य नू ग स
 नि पा न ह व ह द यः सर्व वृद्ध नि म न ना थः कृ स म

अनिनाथहो॥ धनस्त्रीनयाके॥ अनर्मगतलः हिम
गनपूँदाङ्गलः सखनस्यः सख्यसिंहनस्यनम्
मंगनं हवदुष्यः सवोत्तमकस्यनम् मंगनं हवदु
ष्यपुनिपुमाहिरिष्यकस्याहा॥ धनक्राकैकमे॥ प
निर्विवूः समाधमो आद्यासुधाः अंगनाद्याञ्जन

हिलाः पालीनुहुनु कर्मसत्तमहवंग॥ धनअहिरिष्यक
काय॥ उँ सर्वनथागनअहिरिष्यकसमभानियङ्गं॥
धनधालमधुलथिल॥ उँ वज्रदमसुलखेसुवधुध
नद्वं॥ धनसिद्धलैमिक॥ उँ वज्रगीधस्यहा॥ अङ्गका
नय॥ उँ वज्रवासस्यस्याहा॥ सीद्धाय॥ उँ वज्रपूष्यस्या

हा॥ धा ला दाय॥ ॐ नमो ह्यवने विन विल स्य नाय
 ईं रुद्र स्वाहा॥ धन पूष्य न्या स्याय॥ ॐ वरु वे ना च ना
 य स्वाहा॥ ॐ अथो लाय स्वाहा॥ ॐ न त्प र्म रु वा य स्वाहा॥
 ॐ अम ता लाय स्वाहा॥ ॐ ना य नि य स्वाहा॥ ॐ मा म कि
 य स्वाहा॥ ॐ ना नाय स्वाहा॥ ॐ पद्म नि य स्वाहा॥

[illegible]

ॐ उ उ उं हूँ आ आ हं हूँ ॐ २२ हूँ हूँ ॐ २२ हूँ हूँ
 ॐ ३३ ओं हूँ हूँ ॐ श्री श्री हूँ हूँ स्वाहा ॥ धन जा कि पू जा
 या य ॥ ॐ सर्व हूँ हूँ नमो दा हं ॥ जगद थं प्र सा द कं चि
 नाम नि त्रि तः हूँ श्री स म्यं न न मा सु न ॥ धन ज प्र
 या य ॥ ॐ स्वा हा व स्र हूँ सर्व धर्मा नाः स्वा हा व स्र हूँ

[illegible]

त्रिपुत्रिनी ॐ वूं औं जिं खें हूं ॥ ऊँ अस ॥ ॐ नौं मौं पौं नौं वें का
न जानः पंचा म न पंचः प्रदिप निष्पाद्यः ॐ आइं गन्
जाम्बायाधिष्ठयन् ॥ थनवलिसुस्वानवाय ॥ ॐ
ॐ हूं दायस्याहा ॥ ॐ क्रमायस्याहा ॥ ॐ वज्रधायस्याहा ॥
ॐ कवेनायस्याहा ॥ ॐ अस्त्रायस्याहा ॥ ॐ नेशायस्याहा ॥

ॐ वायुव्यास्याहा ॥ ॐ विष्णुनायस्याहा ॥ ॐ उड्डवप्राणि
स्याहा ॥ ॐ सूर्याग्रहाधिपनयस्याहा ॥ ॐ चंद्रानक्ष
त्राधिपनयस्याहा ॥ ॐ अर्धपथिव्यास्याहा ॥ ॐ नागस्य
स्याहा ॥ ॐ असुरस्यस्याहा ॥ ॐ अक्षयस्याहा ॥ ॐ सर्व
दिग्दक्षदिगुलोकपात्रस्याहा ॥ ॥ पंचापचात्र ॥

पूजा ॥ उँ वज्र मंद स्था हा ॥ म ॥ सिद्ध ॥ उँ वज्र पूष्प स्था हा ॥
स्त्री ॥ उँ वज्र धूप स्था हा ॥ म ॥ उँ वज्र दिप स्था हा ॥ म ॥
उँ वज्र नेव श स्था हा ॥ नेव श ॥ उँ न मा रुत्र व स्थ विन
विल स ला य ई ई स्था हा ॥ म ॥ लो ॥ उँ ने लो श्री वं ई वा
नो हिं मे कुं मे किं दि ने स्व ले ॥ अँ कँ को वं ने दो हिं सो त्रि

द्वि सिद्धि वत्र प्र दा ॥ य वं काल ॥ समा सि न्ना सह जा आ
नं दु य पि नि ॥ प्र ह्ना स्ते ने श्री वज्र गो त्रि न मा सु नं म
कि त्व नि ने भुं थ ने पुं पे ने यो य ॥ उँ हं ने मं द्वि सो हा ॥ उँ ने
मो रुत्र वं य वि ने वि ले स्व ना य ई ई ई ॥ उँ अँ ओ ई
ई ई ॥ उँ अँ उँ ई ई ई ॥ उँ उँ उँ ई ई ई ॥ उँ अँ उँ दया

थ न जा कि गो ना हा थ रुप
ल प यो ने ॥

महविताः नो कपात्रा महद्विकाः किनर्यनुः दस कोर्ध
विष्णु रुनालः नमोस्तुते ॥ थन नृप नयाय ॥ ॐ विष्णु
नं वृद्ध विव दिवस कलक्षालासिः पाविन्दुलषूः मे प्रिय
चान नृपः सिले सिवेत्रिः कृति गल वलयुष्यः ॥ वज्रिर्न
रिमनादः विष्णु नंस्तु न नृप नहि न रव रय पंचम

रिपुधर्म्य ॥ थन वज्र स नवीनः वलिसुता किं पूजाया
य ॥ थन मधुल सलष चा चोयस्वी का हा वाय ॥ ॐ व
रुत मसुल रवे सुर्धु धाले द्रुं ॥ ॐ रुवज्र म हा मध्य मज
म नमस्या हा ॥ ॐ हिमध्य मत्र वन मस्या हा ॥ ॐ सी सुष म
ध्य मत्र म नमस्या हा ॥ ॐ यी पूर्वी दि हा यन म ॥ ॐ रं रं

वीधिपायनम॥ वंडरुनगुत्रत्यनम॥ थनपंचप्र
हाप्रकायाय॥ थनचतुत्रत्यदि॥ जाकि कया
हाथशोत्रलपंचोने॥ ॐ श्रीमनगुत्रवल न्यादि
वलिसकिञ्चनिम॥ ॐ हू द्यादया न्यादि॥ ॐ सूर्यो
यदवायनागसंकासंशीपदनागवज्रसूर्येन

मास्तुते॥ थनवज्रसखेवामे॥ थनमलुलथाय॥
कत्ववसर्वसत्त्वार्थसिद्धिदत्ताः श्रीगुलायः गमलायग
ॐ श्री ॐ श्री हूं वज्रमलुलम्॥ सर्वेषां कया न संगत
नुसर्वदा कालं सुहृ॥

ASHA ARCHIVES

2700









































